UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 04 | January – March 2018

शासकीय व अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में जनसंचार माध्यमों का मानवीय मूल्यपरक शिक्षा पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन

ललन कुमार
संत हिरदाराम गर्ल्स कॉलेज
भोपाल, (म.प्र)

डॉ चित्रा शर्मा
संत हिरदाराम गर्ल्स कॉलेज
भोपाल, (म.प्र)

सारांश

हम चाहें या न चाहें, हम अपने दैनिक जीवन में संचार किए बिना नहीं रह सकते। संचार जीवन की निशानी है। मनुष्य जब तक जीवित है, वह संचार करता रहता है। अकसर यह कहा जाता है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित करने में उसकी संचार क्षमता का सबसे बडा योगदान रहा है। परिवार और समाज में एक व्यक्ति के रूप में हम अन्य लोगों से संचार के जरिये ही संबंध स्थापित करते हैं और रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करते हैं। मनुष्य ने चाहे भाषा का विकास किया हो या लिपि का या फिर छपाई का, इसके पीछे मूल इच्छा संदेशों के आदान–प्रदान की ही थी। संचार और जनसंचार के विभिन्न माध्यमों, समाचारपत्र, मोबाइलफोन, टेलीफोन, फैक्स, इंटरनेट, रेडियो, टेलीविजन और सिनेमा आदि के जरिये मनुष्य संदेशों के आदान–प्रदान से एक–दूसरे के बीच की दूरी और समय को लगातार कम से कम करने की कोशिश कर रहा है।

शिक्षा का मुख्य कार्य विकास के प्रमुख पहलुओं, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, संवेगात्मक, सामाजिक एवं नैतिक विकास के बीच सामंजस्य लाना है। लेकिन वर्तमान स्थिति पर ध्यान देने से ज्ञात होता है कि यह सामंजस्य गडबड़ा गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, में समाज में अनिवार्य मूल्यों में निरन्तर कमी पर चिन्ता जताई गई है और सुझाव दिया गया है कि सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास के लिए पाठ्यक्रम में परिवर्तन किया जाना चाहिए ताकि शिक्षा के माध्यम से सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को विकसित किया जा सके।

मूल्यों में समाज की स्वीकृति निहित होती है, शिक्षार्थी अपने कार्य व्यवहार समाज से स्वीकृत मूल्यों के प्रकाश में करता है। शिक्षार्थी अपनी इच्छानुसार जब चाहे उसी रूप में काम नहीं कर सकता उसे अपने अभिभावकों, शिक्षकों एवं साथियों, की भावनाओं का भी ध्यान रखना पड़ता और यही सब उसकी इच्छाओं को नियंत्रित करते हैं। मूल्य उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन एवं निर्धारण हैं। किसी के कार्य व्यवहार के उद्देश्यों से संचालित होते हैं यदि मूल्य सम्मानीय एवं उच्चस्तरीय हैं तो उद्देश्य भी उन्हीं के अनुरूप जनसाधारण की दृष्टि में सम्माननीय हो सकते हैं। शिक्षा मूल्यों का विकास करने में सहायक है।

प्रस्तावना

शिक्षा का प्रमुख कार्य भावी पीढ़ी को नैतिक मूल्य प्रदान करना है। गाँधी जी ने कहा है कि शिक्षा के उद्देश्य मानव को बुद्धिमान बनाने के साथ श्रेष्ठ मानव बनाते है। मूल्यों का विकास बालक के पर्यावरण से प्रभावित होता है। उसे यह पर्यावरण विद्यालय में भी मिलता है। इस आधार पर विद्यालय में होने वाली विभिन्न क्रियाओं का बालक पर मूल्य परक प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा समाज रूपी व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है आज समाज में नैतिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक मूल्यों में गिरावट आई है अतः आज मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता अनुभव की जा रही है क्योंकि नैतिक मूल्य तो सदा प्रासंगिक रहेंगे और उनका औचित्य हमेशा बना रहेगा। नैतिक मूल्य शाश्वत हैं, सार्वदेशिक हैं, सार्वकालिक हैं। इतिहास साक्षी है कि जब–जब नैतिक मूल्यों के महत्व को नकारा गया

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 04 | January – March 2018

है, समाज व देश पतन की और अग्रसर हुए है। आज भी वही स्थिति है आज की पीढ़ी नैतिक मूल्यों से प्रयाण कर चुकी है। नैतिकता में उसकी आस्था समाप्त हो गयी है। सर्वत्र अनैतिकता का बोलवाला है। हमें आज की विषम परिस्थिति का कारण खोजना है और वह है नैतिकता का ह्रास। आज हम देख रहे हैं कि लोगों में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था नही रही और यह कटु सत्य है कि बिना नैतिकता के न तो व्यक्ति को सही मार्ग पर चल सकता है और न समाज और न देश। इसलिए आज नैतिक दिशा के महत्व को समझने और समझाने की परम आवश्यकता है।

अतः आवश्यकता है कि छात्रों में सही मूल्यों का समुचित विकास किया जाये ताकि देश का भावी मार्ग प्रस्तुत हो। अतः प्रश्न उठता है कि विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास कैसे किया जाये। आज वर्तमान संचार और जनसंचार के विभिन्न माध्यमोंएटेलीफोन, इंटरनेट, फैक्स, समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविजन और सिनेमा आदि के जरिये मनुष्य संदेशों के आदान–प्रदान में एक–दूसरे के बीच की दूरी और समय को लगातार कम से कम करने की कोशिश कर रहा है। कि आधुनिकता के भंवर–जाल में फंसकर मानवता की अस्मिता संकटग्रस्त हो चुकी है। अतः आज सभी राजनेता व शिक्षाविद नैतिक मूल्यों को ह्रास के लिये चिन्तित है तथा शिक्षा में जीवन–मूल्यों के समावेश पर बल देते रहे हैं। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में – ''हमें वह शिक्षा चाहिए जिससे की चरित्र बनता है, मन की शक्ति बढ़ती है, प्रतिभा का विस्तार होता है और आदमी अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है।''

संचार का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रकार है जनसंचार ,मास कम्युनिकेशन। जब हम व्यक्तियों के समूह के साथ प्रत्यक्ष संवाद की बजाय किसी तकनीकी या यांत्रिक माध्यम जरिये समाज के एक विशाल वर्ग से संवाद कायम करने की कोशिश करते हैं तो इसे जनसंचार कहते ही मुश्किल है। इसमें एक संदेश को यांत्रिक माध्यम के जरिये बहुगुणित किया जाता है ताकि उसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाया जा सकें। इसके लिए हमें किसी उपकरण या माध्यम की मदद लेनी पड़ती है मसलन अखबार, रेडियो, टी.वी., सिनेमा या इंटरनेट। अखबार में प्रकाशित होने वाले समाचार वही होते हैं लेकिन प्रेस के जरिये उनकी हजारों–लाखों प्रतियाँ प्रकाशित करके विशाल पाठक वर्ग तक पहुँचाई जाती हैं।

जनसंचार का संचार के अन्य रूपों से एक फर्क यह भी है कि इसमें संचारक और प्राप्तकर्ता के बीच कोई सीधा संबंध नहीं होता है। प्राप्तकर्ता यानी पाठक, श्रोता और दर्शक संचारक को उसकी सार्वजनिक भूमिका के कारण पहचानता है। संचार के अन्य रूपों की तुलना में जनसंचार के लिए एक औपचारिक संगठन की भी जरूरत पड़ती है। औपचारिक संगठन के बिना जनसंचार माध्यमों को चलाना मुश्किल है। जैसे समाचारपत्र किसी न किसी संगठन से प्रकाशित होता है या रेडियो का प्रसारण किसी रेडियो संगठन की ओर से किया जाता है। जनसंचार माध्यमों की एक और महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि उनमें ढेर सारे द्वारपाल काम करते हैं। द्वारपाल वह व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह है जो जनसंचार माध्यमों से प्रकाशित या प्रसारित होने वाली सामग्री को नियंत्रित और निर्धारित करता है।

इन प्रभावशाली संभावनाओं के साथ संचार की सीमाओं पर ध्यान रखना भी आवश्यक है। संचार एक भ्रष्टाचार, मानवाधिकार–हनन और सांप्रदायिकता जैसे मामलों को जनसंचार माध्यमों ने लगातार उठाया है और लोगों को जागरूक बनाने की कोशिश ही है। हाल के वर्षों में स्टिंग आपरेशन के जरिये सामने आया 'तहलका कांड' हो या 'ऑपरेशन दुर्योधन' या 'चक्रव्यूह', सबने यही साबित किया है कि यदि चाहे तो जनसंचार माध्यम सत्ता के शिखर को भी हिला सकते हैं। लेकिन जनसंचार माध्यमों के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं। अगर सावधानी से इस्तेमाल न किया जाए तो लोगों पर उनका बुरा प्रभाव भी पड़ता है।

जनसंचार माध्यमों खासकर सिनेमा पर यह आरोप भी लगता रहा है कि उन्होंने समाज में हिंसा, अश्लीलता और असामाजिक व्यवहार को प्रोत्साहित करने में अगुआ की भूमिका निभाई है। हालाँकि, विशेषज्ञों का

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 04 | January – March 2018

यह मानना है कि जनसंचार माध्यमों का लोगों पर उतना वास्तविक प्रभाव नहीं पड़ता जितना कि उसके बारे में समझा जाता है। लेकिन जनसंचार माध्यमों के प्रभाव को लेकर कुछ धारणाएँ इस प्रकार हैं जनसंचार माध्यम लोगों के व्यवहार और आदतों में परिवर्तन के बजाए उनमें थोड़ा–बहुत फेरबदल और उन्हें और ज्यादा मजबूत करने का काम करते हैं।

मूल्यपरक शिक्षा

''हम मूल्य की किसी एक परिभाषा पर एक मत नही हो पाये है। मतैक्य के रूप में तो केवल इतना ही कहा जा सकता है कि मूल्य मानव अस्तित्व में किसी महत्त्वपूर्ण चीज का प्रतिनिधित्व करते है।'' 'मूल्य' के लिए इंग्लिश में शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द से मानी है जो किसी वस्तु की कीमत, गुण या उपयोगिता को व्यक्त करता है। मूल्य एक ऐसी आचार संहिता या गुणों का समावेश है जिसे अपनाकर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास कर समाज में प्रभावशाली एवं विश्वसनीय बनकर उभरता है।

मूल्यपरक शिक्षा विद्यार्थियों को नैतिक रूप से समृद्ध बनाती है जिसकी आज परम आवश्यकता है किन्तु तीव्र आर्थिक विकास और सामाजिक रूपांतरण के कारण आज भारतीय समाज संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। पहले जमाने में संयुक्त परिवार व्यवस्था प्राथमिकता का केन्द्र थी जिसका लाभ यह था कि माता–पिता, दादा–दादी व अन्य परिजन बच्चों को सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों की शिक्षा देते थे। इस तरह ऐतिहासिक दृष्टि से भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में मूल्यों की शिक्षा का स्पष्ट समावेश पाया जाता था। किन्तु आज संदर्भ व परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं। परिवारों में संयुक्त प्रथा टूटन के कगार पर है। माता–पिता दोनों काम करते है और एकल परिवारों का प्रचलन बढ़ चुका है। बच्चों की भावात्मक और नैतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का ध्यान अभिभावक नहीं रख पाते, न ही दादा–दादी या अन्य परिजन पास होते जिस कारण संस्कृति, सदाचार, नैतिक मूल्य परिवार के दायरे से बाहर हो गए हैं अतः आज की परिस्थितियों में यह एक बड़ी समस्या बन गई है कि चारों ओर मूल्यों का ह्रास हो रहा है। अतः ऐसे में मूल्यपरक शिक्षा कैसे दी जाए व इस नैतिक जिम्मेदारी को कौन उठाए। जनसंचार के माध्यमों का मानवीय मूल्य सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, पारिवारिक आदि कक्षा में पढ़ाने से नहीं विकसित होते। नैतिक मूल्यों के विकास के लिए कोई समय सीमा नहीं होती है मूल्य किसी भी स्थान, किसी भी समय विकसित हो सकते है तथा कोई भी राजनेता, कलाकार, अध्यापक, अभिभावक व मित्र विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों को विकसित कर सकते हैं। आज युवाओं को वर्तमान भौतिकवादी संसार में जीवनयापन करने के लिए अपनी इंद्रियों को वश में रखना बहुत आवश्यक हो गया है अन्यथा सफलता के शिखर पर पहुँचकर भी उन्हें पतन के गर्त में गिरने में देर नहीं लगेगी। शिक्षार्थियों के लिये प्रस्तुत शोध का शैक्षिक निहितार्थ यह है कि जनसंचार के माध्यमों का मानवीय मूल्यों की पालना ही उनके सफल जीवन की कुंजी है। अतः हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत शोध कार्य समाज के प्रत्येक वर्ग को लाभान्वित करने में सक्षम हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आर्य, सुमित्रा – किशोरावस्था में नैतिक मूल्य, क्लासिक पब्लिकेशन
ऐडा जोसेपा, ए. बोटिस्टा – वेल्यू एजूकेशन इन रिलिजिएन्स एजूकेशन
भारती, विजय – वेल्यू ओरियन्ट एजूकेशन, नील कमल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
वेस्ट जॉन डब्ल्यू – शिक्षा में शोध सातवाँ संस्करण, प्रिंटिग हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2004
बैक, सी – वैल्यूज एवं लिविंग, ओ. आई. एस. ई. प्रेस, टोरेन्टो, 1983

1. भारतीय आधुनिक शिक्षा (छात्रों में मूल्य संवर्धन), एन.सी.ई.आर.टीनई दिल्ली, जुलाई 2014–15
2. इण्डियन एजूकेशनल एब्सट्रेक्ट्रस, एन.सी.ई.आर.टी., : वॉल्यूम–7, न. 2, जुलाई 2016
3. अध्यापक साथी, एन.सी.ई.आर.टी., 2015
4. इ.डी.यू. ट्रेक्स (पर्सनल वेल्यू प्रोफाइल ऑफ स्टूडेन्ट टीचर्स), जून, 2012
5. परिप्रेक्ष्य शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक संदर्भ, 2009